सई नदी के किनारे पर स्थित पुरास्थलों का सर्वेक्षणः उन्नाव जिले के सन्दर्भ में

डॉ0 दीपशिखा पाण्डेय

डॉ0 सुशान्त कुमार पाण्डेय

सई नदी गोमती नदी की सहायक नदी है। इसकी उत्पत्ति बिजगाँव निकट पिहानी जिला हरदोई में स्थित अश्वखुर के समान जलाशय से हुई है। सई नदी लगभग 600 कि0मी0 तक चलती हुई लखनऊ, उन्नाव से गुजरती हैं यह हरदोई, रायबरेली, प्रतापगढ से होती हुई जिला जौनपुर में राजेपुर में गोमती नदी से मिल जाती है। इसकी उत्पत्ति स्थल से लेकर गोमती नदी में मिलने के स्थान पर अनेक पुरातात्विक स्थल पाये गये हैं। उन्नाव जिले में संचानकोट, मोहान, सिमरी, और अजगैन में सई नदी के किनारे लगभग पाँच बड़े ऐतिहासिक स्थल प्राप्त होते हैं। सई नदी अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण धार्मिक नदियों में से एक हैं जिसका विवरण हमें रामचरितमानस के 188वे चौपाई में प्राप्त होता हैः

सई तीर बसि चले बिहाने। सृंगबेरपुर सब निअराने॥

हर्ष के काल में (606–647 ई0) चीनी यात्री श्वान–च्वांग (ह्वेनसांग) ने भारत यात्रा की थी। उसने लखनऊ क्षेत्र के दो स्थलों का उल्लेख किया है– किया–शी–पुला तथा पी–सो–किया। इतिहासकार स्मिथ ने इन स्थानों को मोहनलालगंज तथा मोहान से जोड़ा हैं।

सई नदी के किनारे पुरातात्विक सर्वेक्षण के अन्तर्गत सई नदी के दोनों किनारों पर स्थित पुरास्थलों का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण कार्य के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डी0पी0 तिवारी के निर्देशन में परास्नातक डिप्लोमा पुरातत्व एवं संग्रहालय विज्ञान के छात्रों का सर्वेक्षण दल गठित किया गया। इस दल का मार्गदर्शन डॉ0 अनिल कुमार एवं स्वयं मैंने किया है। इस सर्वेक्षण दल ने उन्नाव के महत्वपूर्ण प्राचीन टीलों एवं प्राचीन मन्दिर एवं मूर्तियों का अध्ययन किया। जिनमें प्रमुख हैं– बेंती गॉव का नारेश्वर मंदिर, नेवल गंज का शिव मंदिर, नेवलगज का अन्य शिव मंदिर, नागेश्वर मन्दिर, जलेश्वरनाथ मंदिर एवं मोहान टीला, जिनका विवरण इस प्रकार है :

बेती गाँव का नारेश्वर मंदिरः

बेती गॉव लखनऊ जनपद से 55 कि0मी0 की दूरी पर सरोजनीनगर तहसील में देशान्तर 80º46'25" एवं उत्तरी देशान्तर 26º40'50" पर स्थित हैं। लखनऊ से दादूपुर होते हुए पक्की सड़क के द्वारा निजी वाहन से सरायसाहजादी में मिर्जापुर मोहान मार्ग में मिलकर दाहिनी हाथ की ओर मुड़कर लगभग 2 कि0मी0 बाद बेंती गाँव पहुँचते हैं। पूरा गाँव एक प्राचीन टीले पर स्थित है जिसके अधिकांश भाग में ग्रामीण बस्ती का विकास हो चुका है। इस गाँव में चार स्थल 1 नारेश्वर मंदिर, 2 शिवलिंग युक्त चबूतरा, 3 मध्यकालीन कुँआ एवं 4 अन्य मंदिर, पुरातात्विक महत्व के हैं।

नारेश्वर मंदिर को किसी पुराने मन्दिर स्थल पर जीर्णोद्धार से बनाया गया है।, (फलक संख्या–1.1) इसका निर्माण सन् 2009 में बी0आर0 डोंगरा महोदय तथा उनके सहयोगियों के द्वारा करवाया था, जिसका उल्लेख मन्दिर के बाहरी दीवार पर लगाये गये शिलापट्ट पर मिलता है।

(फलक संख्या–1.2) यह मन्दिर सवा तीन फुट ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। इसका परिमाप 7.74 मीटर x 7.44 मीटर अर्थात् वर्गाकार है। जिसकी दीवार की मोटाई 31 सेमी0 है। (फलक संख्या–1.1) मन्दिर में प्रवेश करने के लिए पूर्व में मुख्य तथा उत्तर दिशा में सोपान युक्त एक अन्य द्वार का निर्माण किया गया है। इस मन्दिर का निर्माण नागर शैली में किया गया है। इसका शिखर पिरामिड के आकार का है जिसके ऊपर त्रिशूल लगा हुआ है। इसके शीर्ष भाग से भीतर की ओर शिवलिंग के ऊपर एक जंजीर में बँधा हुआ घण्टा लटक रहा है। (फलक संख्या–1.4)। चूंकि यह मन्दिर आधुनिक है अतः गर्भग्रह में स्थापित शिवलिंग का अर्घा संगमरमर पत्थर का बनाया गया है जिसके मध्य में एक पेबुल पत्थर और ताँबे का सर्प फण स्थापित किया गया है। (फलक संख्या–1.3) इस मन्दिर में अन्तः भाग में दीवार के किनारे प्लेटफार्म बनाये गये हैं जिनके ऊपर संगमरमर की आधुनिक समय की बनी हुई देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ रखी हुई हैं। इनकी पहचान साँई, गणेश लक्ष्मी, शंकर–पार्वती, राम लक्षमण, सीता, हनुमान, राधा–कृष्ण, विष्णु–लक्ष्मी आदि के साथ की जा सकती है। मन्दिर के पश्चिमी दीवार पर एक शिलापट्ट पर हनुमान चालिसा भी उत्कीर्ण कर के लगाई गयी है। प्रायः प्राचीन मन्दिरों में मुख्य देवता के परिवार की प्रतिमाएँ ही मिलती हैं, किन्तु गाँव वालों ने श्रद्धावश इस सिद्धान्त का यहाँ उल्लघंन किया है। मन्दिर की दक्षिणी दीवार के किनारे पर बलुए पत्थर पर निर्मित कुछ देवी–देवताओं की खण्डित एवं अपर्दनित पाषाण प्रतिमाएँ एकत्र कर के रखी गयी हैं जिनसे किसी सम्पूर्ण देव परिवार के पैनल की पहचान नहीं हो पाती है। इनमें से एक द्वारपाल जैसी आकृति की पहचान की जा सकती है। शेष पेबुल पत्थरों का संग्रह इस बात का संकेत देता है कि गाँव में घर–घर में शिव की उपासना की जाती थी। (फलक संख्या–1.5) मन्दिर के बाहर पश्चिम दिशा की ओर एक पीपल के वृक्ष के नीचे एक शनि प्रतिमा भी रखी हुई है। (फलक संख्या–1.6)

यद्यपि यह मन्दिर संरचना नितान्त आधुनिक है तथापि मन्दिर के अन्दर रखी हुई मूर्तियाँ इस बात का संकेत देती हैं कि बेती गाँव में 13वी – 14वीं शताब्दी में एक प्राचीन शैव मन्दिर रहा होगा।

इसी मन्दिर से लगभग 200 मीटर की दूरी पर गाँव के मध्य में एक चबूतराकार संरचना पर पुनः एक शिवलिंग स्थापित मिलता है।(फलक संख्या–1.7) जिसके चारो ओर बनायी गई लगभग दो फुट ऊँची दीवारों में ताखों का निर्माण कर के गणेश और दोनों हाथ जोड़कर बैठे हुए उपासक एवं तीन मुख वाले ब्रह्मा ? की पत्थर की मूर्तियॉ स्थापित है। (फलक संख्या–1.8)

इस चबूतरे के आगे गाँव के भीतर पूर्व दिशा में लगभग 100 मीटर की दूरी पर एक प्राचीन कुँआ बना हुआ दिखाई देता है, जिसे मध्यकालीन ईटों के द्वारा बनाया गया है। (फलक संख्या–1.9) इस समस्त पुरातात्विक साक्ष्यों के आलोक में 13वीं–14वीं शताब्दी से लेकर मध्यकाल तक की बस्ती होने के साक्ष्य का अनुमान लगाया जाता है।

नेवलगंज का शैव मन्दिर

लखनऊ जनपद से मोहान जाने वाली सड़क पर 30 कि0मी0 बाद पक्की सड़क पर ही दो मन्दिर बने हुए हैं और दोनों ही मन्दिर शैव धर्म से सम्बन्धित हैं।

नेवलगंज का प्रथम शैव मन्दिर

लखनऊ से मोहान जाते समय नेवलगंज कस्बे में दाहिनी हाथ की होर एक अष्टकोणीय मन्दिर है जिसकी प्रत्येक भुजा 1.9 मीटर लम्बी है। इसकी दीवारें 1.14 मीटर चौड़ी है जिसका प्रवेश द्वार 1.44 मीटर चौड़ा है। यह मन्दिर एक ऊँची चौकी

पर बना हुआ है, जिस पर खरबुजिया डोम (गुम्मद) (फलक संख्या–2.1) तथा ऊपर त्रिशूल लगा हुआ हैं। मन्दिर के शिखर भाग में छत पर सर्पों की आकृतियॉ बनी हैं।(फलक संख्या–2.2) मन्दिर के गर्भग्रह में काले रंग के महीन कण वाले पत्थर पर अर्घायुक्त शिवलिंग स्थापित है जिसके सामने संगमरमर का बनाया गया शिव का वाहन नन्दी भी स्थापित है। मन्दिर की छत और सतह के बीच में गुम्बद के सन्धि स्थल पर ताखों में विष्णु की दशावतार मूर्तियों की स्थापना की गई है, जिसमें राम की धनुर्धारी प्रतिमा सर्वाधिक सुरक्षित अवस्था में है। (फलक संख्या–2.4) इनमें अधिकांश मूर्तियॉ मिट्टी की बनाई गयी है जिनके रंग प्रायः फीके पड़ गये हैं। (फलक संख्या–2.5) यह मन्दिर लगभग 300 वर्ष प्राचीन प्रतीत होता है। उत्तर प्रदेश में नवाधिकाल में इस प्रकार के मन्दिरों को बनाये जाने की परम्परा पायी जाती है।

नेवलगंज का द्वितीय शैव मन्दिरः

नेवलगंज के प्रथम मन्दिर से लगभग 50 मीटर आगे बाएँ हाथ की ओर दूसरा अन्य मन्दिर भी है, जिसका प्रवेश द्वार पोर्टिकोयुक्त है, जिसके ऊपर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी चन्द्रशेखर आजाद की बॉया हाथ मूँछों पर रखे हुए तथा दाहिने हाथ में पिस्तौल पकड़े हुए प्रतिमा बनायी गयी है।(फलक संख्या–2.7) नागर शैली में निर्मित यह मन्दिर अपेक्षाकृत अच्छी दशा में है, जिसके उर्ध्व भाग में खरभुजिया शिखर के नीचे चारो ओर सिंह और बीच–बीच में प्रहरी खड़ी मुद्रा में बनाये गये हैं। इसके प्रवेशद्वार के दोनों ओर ताखों में एक–एक हनुमान प्रतिमाएँ बनी हैं जिनके बॉये हाथ में गदा है जो कि भूमि से सटा हुआ है दोनों के दाहिने हाथ अभय मुद्रा में हैं तथा दोनों के गले में फूलों की माला भी बनायी गयी है। दाहिनी ओर की प्रतिमा के बगल में काली की प्रतिमा बनाई गयी है। जिसके पैरों के पास एक काले रंग का कुत्ता भी प्रदर्शित है। मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग और नन्दी की प्रतिमा स्थापित है। यह मन्दिर वर्गाकार है जिसकी प्रत्येक भुजा 4.35 मीटर है, किन्तु अन्तः सरंचना अष्टकोणीय है। इसके गर्भग्रह का प्रवेश द्वार 1.80 मीटर चौड़ा है। प्रवेशद्वार के दोनों पार्श्व में वर्गाकार अर्द्धस्तम्भ निर्मित है जो 90 से0मी0 चौड़े हैं।

मन्दिर के ऊपरी भाग में मिट्टी की बनी हुई देव प्रतिमाएँ स्थापित हैं।(फलक संख्या–2.9) जिनकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। किसी–किसी के अंग–प्रत्यंग नष्ट हो गये हैं किन्तु अन्य प्रतिमाएँ जैसे– सरस्वती (फलक संख्या–2.11), शिव–पार्वती (फलक संख्या–2.12), सिंहवाहिनी दुर्गा (फलक संख्या–2.13), चतुर्भुजी गणेश (फलक संख्या–2.10) अच्छी दशा में विद्यमान हैं। यह मन्दिर भी 200–300 वर्ष पुराना प्रतीत होता है।

जलेश्वरनाथ मन्दिरः

यह मन्दिर एक आधुनिक काल का मन्दिर है। जो सई नही के बाएँ तट पर निर्मित है। (फलक संख्या–4.1) जलेश्वर का तात्पर्य भगवान शंकर से है। यह मन्दिर श्री ठाकुर जी को समर्पित है और इस मन्दिर का निर्माण सन् 1991 ई0 में पं0 विशेश्वर दयालु बाजपेयी के सुपुत्र स्व0 पं0 शिवशंकर बाजपेयी के द्वारा करवाया गया था जिसकी जानकारी इस मन्दिर के बाहर प्रवेशद्वार पर लगे शिलापट्ट से प्राप्त होती है।(फलक संख्या–4.2) मन्दिर में प्रवेशद्वार से प्रवेश करने पर मन्दिर प्रांगण के बीचोबीच एक पीपल का वृक्ष हैं इसके तने के पास संगमरमर पर निर्मित एक उपासक की प्रतिमा एवं कुछ पेबुल पत्थर हैं। (फलक संख्या–4.3) दक्षिणी किनारे पर चार कक्षों वाला एक आवास बना हुआ है, जिसके मध्यवर्ती कक्ष में टीले से एकत्र कर रखे हुए मनके इत्यादि सुरक्षित हैं। इसके पूर्वी छोर पर एक पंक्ति में

चार मन्दिर निर्मित है, जो सभी शैव धर्म से सम्बन्धित हैं।

प्रथम मन्दिर के गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। जिसके समीप ही संगमरमर पर निर्मित शिव का वाहन नन्दी (फलक संख्या–4.5) एवं गणेश (फलक संख्या–4.6), विष्णु सूर्य, हनुमान (फलक संख्या–4.7) एवं अन्य प्रस्तर आकृतियॉ स्थापित हैं। इस मन्दिर के पीछे के भाग में एक छोटी सी कोठरी में एक सफेद रंग का बेलनाकार प्रस्तर रखा हुआ है। (फलक संख्या–4.8) इसी मन्दिर में पार्श्व में एक दूसरा शैव मन्दिर है। जिसके अन्दर अर्घायुक्त शिवलिंग एवं नन्दी की प्रतिमा भी विद्यमान हैं। यही स्थिति तृतीय मन्दिर की भी है। चतुर्थ मन्दिर में शिवलिंग के अतिरिक्त पार्वती की पाषाण प्रतिमा अलग से स्थापित है। जो इस चबूतरे के ऊपर है। एक नारी आकृतियुक्त अर्घासहित शिवलिंग स्थापित है। इस नारी के बाल घुँघराले, चेहरा गोल, नासिका चौड़ी, आँखें ध्यान मुद्रा में लगभग बन्द और होंठ मोटे हैं और गले में कण्ठाहार हैं। यह बाहुविहीन नारी आकृति शिवलिंग पर ही उकेरी गयी है जो कदाचित पार्वती का प्रतिनिधित्व करती है। (फलक संख्या–4.9)

मोहान टीलाः

लखनऊ से बाँगरमऊ जाने वाली सड़क पर लखनऊ से 35 कि0मी0 की दूरी पर सड़क के दाहिने किनारे पर मोहान का प्राचीन टीला लगभग 10 मीटर ऊँचा, 1वर्ग कि0मी0 क्षेत्र में फैला हुआ हैं। यह टीला उन्नाव जनपद के हसनगंज तहसील में स्थित है। मोहान से लखनऊ की दूरी लगभग 35 कि0मी0 और बाँगरमऊ की दूरी 40 कि0मी0 है। प्रश्नगत टीला सई नदी के बॉयें तट पर स्थित है तथा दो–तीन भागों में विभक्त है। गहरी रेन गलियों में टीले के अन्य छोटे–छोटे हिस्से भी कर दिये हैं। यहाँ के मुख्य आकर्षण जलेश्वरनाथ मंदिर एवं टीले की पुरासम्पदा है।

मोहान टीले के धरातल पर सर्वेक्षण करने से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड, उत्तर कृष्णमार्जित मृद्भाण्ड, कृष्ण लेपित मृद्भाण्ड और लाल रंग के मृद्भाण्ड अवशेष प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी के मनके पशु आकृतियॉ एवं जानवरों की अस्थियॉ भी उपलब्ध होती हैं। यहॉ से प्राप्त मृद्भाण्डों की एक संक्षिप्त टिप्पणी इस प्रकार से प्रस्तुत की जा सकती है।

P.G.W. (चित्रित धूसर मृद्भाण्ड) – इस वर्ग के अवशेषों में आकार विहीन कुछ ठीकरे ही प्राप्त हुए हैं। जो पतली गढ़न के हैं जिनपर काले रंग से एक रेखा अलंकृत किये जाने के साक्ष्य मिलते हैं।

N.B.P.W. (उत्तरी कृष्णमार्जित मृद्भाण्ड) – इस वर्ग के पात्रों में बहुत पतले गढ़न के काले रंग के चमकीले मृद्भाण्डों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। जिनमें कोई आकृति युक्त मृद्भाण्ड प्राप्त नहीं हुआ है। इसकी अनुसरणीय पात्र परम्पराओं में ऑरेन्ज रेड स्लीप्ड वेयर की पतली गढ़न के बने हुए तश्तरियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। दूसरी अनुसंगी पात्र परम्परा कृष्णलेपित मृद्भाण्ड भी पतले गढ़न में मिलती है। किन्तु उनमें थालियों के अतिरिक्त कटोरे के भी अवशेष मिलते है। भूरे रंग के पात्र प्रायः टुकड़ों में पतली गढ़न में प्राप्त हुए हैं।

लाल रंग के मृद्भाण्ड –_लाल रंग के मृद्भाण्डों में पतले गढ़न में बने हुए कटोरे और तश्तरियों के अंश अवशेष प्राप्त हुए हैं जो उत्तरी कृष्णमार्जित मृद्भाण्ड पात्र परम्परा के अनुसंगी है। लम्बी गर्दन वाले घड़े सुराही कोखदार हांडियॉ तथा कटोरे, कुषाण कालीन बर्तनों की आकृति टीले से प्राप्त होती है। पूर्व मध्यकाल और मध्यकाल में पाये जाने वाले मध्यम मोटाई में निर्मित कटोरों की संख्या ऊपरी धरातल पर दिखाई देती है।

मृद्भाण्डों के वर्ग और पात्रों के आकार के आधार पर मोहान के इस टीले की सांस्कृतिक बस्तियों को महाभारतकाल से लेकर मध्यकाल तक एक निरन्तर क्रम में रखा जा सकता है। आज भी यह टीला आबाद है जिसके कुछ हिस्से पर मोहान का कस्बा बसा हुआ है।

संदर्भ

- इंडियन आर्कियालॉजी–ए रिव्यू, आर्कियोलॉजी सर्वे ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
- एशियंट इण्डिया, बुलेटिन ऑफ द आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
- पुरातत्व, द बुलेटिन ऑफ इंडियन आर्कियोलॉजिकल सोसाइटी, नई दिल्ली ।
- मैन एण्ड इनवायरमेण्ट, जनरल ऑफ द इंडियन सोसाइटी फॉर प्री हिस्टोरिक एण्ड क्वाटर्नरी स्टडीज, पुणे।
- हिस्ट्री टुडे, जर्नल ऑफ हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरिकल आर्कियोलॉजी, इंडियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर सोसाइटी, नई दिल्ली।
- इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, ए जनरल ऑफ इंडियन काउन्सिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, नई दिल्ली।
- Kumar, Vineeta, Chaurasia Girdhari Lal, Water Quality Status of Sai River in Uttar-Pradesh With Reference to Water Quality Index Assessment, International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (An ISO 3297: 2007 Certified Organization) Vol. 4, Issue 1, January 2015

चित्र फलक

नरेश्वर मन्दिर (फलक संख्या– 1.1)

नरेश्वर मन्दिर के बाहर लगा शिलापट्ट (फलक संख्या– 1.2)

गर्भग्रह में स्थापित सर्वयुक्त शिवलिंग (फलक संख्या– 1.3)

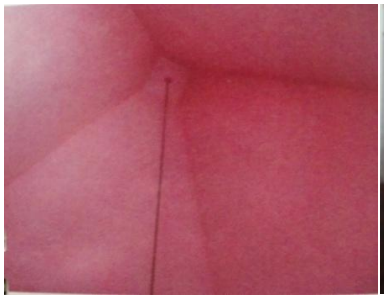

नरेश्वर मन्दिर के भीतर छत से बंधा हुए घण्टे की जंजीर (फलक संख्या– 1.4)

नरेश्वर मन्दिर के भीतर रखे हुए पेबुल पत्थर और खण्डित मूर्तियों के भाग (फलक संख्या– 1.5)

नारेश्वर मन्दिर के बाहर रखी हुई शनि प्रतिमा (फलक संख्या– 1.6)

बेती गॉव स्थित चबूतरा स्थित मन्दिर का द्वार

बेतीगॉव का चबूतरायुक्त शिवलिंग (फलक संख्या– 1.7)

दोनों हाथ जोड़कर बैठे हुए ब्रह्म ? की प्रतिमा (फलक संख्या– 1.8)

लखौरी ईंटों से निर्मित मध्यकालीन कुँआ (फलक संख्या– 1.9)

बेती गॉव स्थित एक अन्य मन्दिर

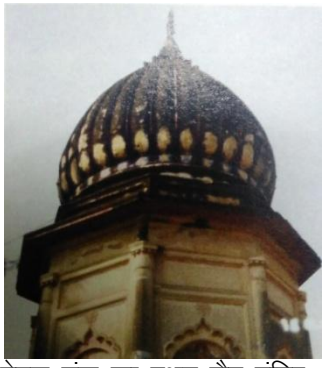

नेवल गंज का प्रथम शैव मंदिर (फलक संख्या– 2.1)

मन्दिर के भीतर की छत पर बनी सर्प सर्प आकृतियॉ (फलक संख्या– 2.2)

मन्दिर के गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग और नंदी की प्रतिमा (फलक संख्या– 2.3)

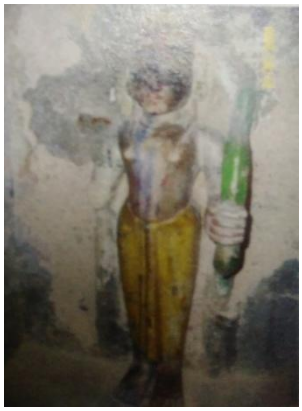

मन्दिर के भीतर आले में सुरक्षित राम की प्रतिमा (फलक संख्या–2.4)

मंदिर के आले में धूमिल और खण्डित मिट्टी की प्रतिमाएँ (फलक संख्या– 2.5)

मन्दिर के अन्दर दशावतार प्रतिमाएँ (फलक संख्या– 2.6)

मन्दिर का पोर्टिकोयुक्त मुख्य प्रवेशद्वार (फलक संख्या– 2.7)

मन्दिर का खरभुजिया शिखर चारों ओर प्रतिमाएँ (फलक संख्या– 2.8)

मन्दिर के भीतर ताखों पर देवी प्रतिमाएँ (फलक संख्या– 2.9)

चतुर्भूजी गणेश की प्रतिमा वाहन मूषक के साथ (फलक संख्या– 2.10)

मन्दिर में ताखे में रखी सरस्वती प्रतिमा (फलक संख्या– 2.11)

शिव–पार्वती की प्रतिमा (फलक संख्या–1.9) (फलक संख्या– 2.12)

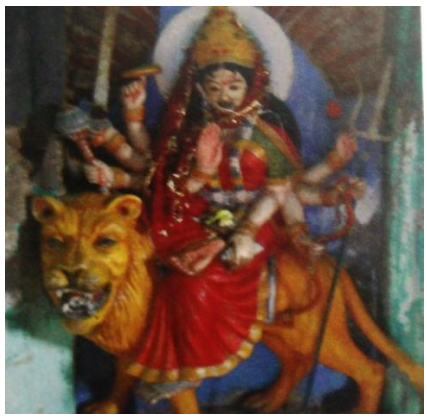

सिंह–वाहिनी दुर्गा की प्रतिमा (फलक संख्या– 2.13)

आभार

प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, के विभागाध्यक्ष प्रो0 डी0पी0 तिवारी एवं डॉ0 अनिल कुमार जी एवं सर्वेक्षण दल के समस्त छात्रों के प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिनके प्रोत्साहन के फलस्वरूप इस सर्वेक्षण कार्य को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त हुई है।

Copyright © 2014. Dr. Deepshikha Pandey and Dr. Sushant Kumar Pandey. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.